रस की सुवास

प्रश्न : मैं आपको सुनता हूं तो चकित हो रह जाता हूं! अवाक होता हूं, आश्चर्यविमुग्ध होता हूं, लेकिन संन्यास में छलांग नहीं लगा पाता हूं। क्या करूं?

साधारमण! अवाक होते हो? सच, अवाक होते हो? सच, विस्मयविमुग्ध होते हो? आश्चर्यचकित होते हो? तब तो छलांग लग ही जाएगी। फिर होश किसको रहेगा छलांग से रुकने का? मदमस्त होते हो? तो पता ही नहीं चलेगा कब छलांग लग गई। छलांग लग जाएगी तभी पता चलेगा कि अरे, छलांग लग गई!

मगर तुम कंजूसी कर रहे हो। थोड़े-थोड़े अवाक होते होओगे—मात्रा में, होम्योपैथी की मात्रा में! बच-बच कर! ज्यादा बरसने लगता होऊंगा तो छाता लगा लेते होओगे। ऐसे दूर-दूर खड़े रहते होओगे, द्रष्टा की तरह। अभी तुम्हारा-मेरा संबंध भोक्ता की तरह नहीं जुड़ा। अभी तुम्हारा संबंध सुनने वाले की तरह है, एक श्रावक की तरह। अभी तुम्हारा संबंध एक भक्त की तरह नहीं जुड़ा। और भक्त का ही संबंध होता है। श्रावक का कोई संबंध होता है! सुन लिया, बात अच्छी लगती है, थोड़ा इकट्ठा कर ली, थोड़ा ज्ञान बढ़ गया, थोड़ी ज्ञान की संपदा बढ़ गई, थोड़ा अहंकार को और आभूषण मिल गए, थोड़ा बात करने को बात मिल गई, थोड़ा औरों के सामने ज्ञान बघारने की सुविधा मिल गई।

मगर अगर सच ही तुम कहते हो कि अवाक हो रहे हो, चकित हो रहे हो, विस्मयविमुग्ध हो रहे हो, तो फिर पूछना क्या है? और छलांग भी कोई पूछ-पूछ कर लगानी होती है? छलांग तो वही जो बिना पूछे लगानी। पूछ-पूछ कर लगानी तो वह तो सीढ़ियां चढ़ना है। वह तो हिसाब-किताब बिठालना है। कि क्या मिलेगा, क्या नहीं मिलेगा? क्या फायदा, क्या हानि? कितना जाऊं, कितना न जाऊं? इतना जाऊं कि अगर जरूरत पड़े तो वापस लौट सकूं।

छलांग का मतलब होता है : दीवानगी। छलांग का अर्थ होता है : पागल प्रेम।

चूक मत जाना! सुनते-सुनते ही मत रह जाना!

जब वक्त का अनोखा रथ चमकदार
रुक गया अकस्मात आकर तुम्हारे द्वार
तुम रह गए अवाक
अविश्वास भरी आंखों से देखते रहे चकाचौंध
सुनते रहे जयकार,
समय की मुड़ती हिलोर पर,
बह कर आया हुआ
निर्णय का स्वर्ण-मुकुट
अनायास
चकरा कर घूम गई धरती
तुम्हारे आस-पास,
मुग्ध देखते ही रहे
ज्वार की अपार फेन-चूड़ा पर उठा हुआ
अमृत-घट
वक्त का रथ जो तुम्हारे लिए आया था
तुमने उसे लिया नहीं!
बांट कर पीया नहीं!

जब एक अकल्पित अनहोनी दिशा से
सन्नाटा फैलाता तूफान आया था
दमघोंट अंधकार चारों तरफ छाया था,
तुम्हारी अलग-अलग नावें
लोप हुई थीं झपट उड़ते कुहासों में
लोगों ने तब एक बड़ा दीपक जलाया था
तूफान चीरता, पथ को दिखाता जो
किनारे तुम्हारे लाया था,
भूल कर भूमिका
तुम वह अजूबा सबको दिखाने लगे
इस हाथ उस हाथ
आपस में दीपक फूंकने, बुझाने लगे
और गहरे अंधकार गर्त में
लोग समाने लगे
वह चिराग चौमुख कर
लोगों को तुमने दिया नहीं!
रोशनी पर धूल पड़ी
चांदना हुआ नहीं!

देखो, वह ताजी खुली गंध-हवा
बही थी जो इस विशाल वृक्ष पर
होने लगी है मंद
उलटी बयार में
एक-एक गलत कदम
घनघनोर चक्रमित बगूला बना जाता है
उलझ रहीं
जूझ रहीं आपस में डालियां
झौरों से झौरे
पत्तों से पत्ते
तिनकों से क्षुद्र तिनके
जल रहे असहाय नीड़
फट रहे चिंदियों से फल-फूल
फूट रहे भरे-भरे मधुकोष
वृक्ष का शरीर
जिंदा लोथड़ों में कट कर
उछल-उछल जाता है
धूल और धक्कड़ में
भन्नाती निकल पड़ीं रक्त-सोख मक्खियां
निर्द्वंद्व घूमते हैं सीना तान हिंस्र जंतु
घात लगा खड़े हर तरफ क्रूर बटमार
कांपते हैं निर्दोष
दमखुश्क हर द्वार
अडिग महावृक्ष अभी करता है इंतजार,
माथे पर अनुभव की तेजस्वी रेखाएं
देख रहीं धारावाही त्रिकाल
देख रही
इस अखंड वृक्ष का किसे है खयाल,
शीश जिसका खुद ही है आकाश
जड़ों में जमी बैठी हैं
अनगिन शताब्दियां
मनवंतर बन गए जिसके रस की सुवास
छाया के छत्रक में
संस्कृति की जगमग नक्षत्र माल
ममता बनी गंगा
तप जिसका बन गया दिपनार हिमवान
मोर पंख मैदान
विंध्या लालिम हिरण्य
धीरज का अलख ध्यान
रांगोली वन प्रांतर, गांव, खेत, खलिहान
सतिए पर अक्षत सी संतान
उठ रही इस औघड़ तरु से
मौन काल की पुकार
छाया भोगने वालो होशियार
यह सब तुम पर निछावर किया
हर बार
किंतु वक्त करता नहीं
किसी का भी इंतजार
समय का रथ ज्यादा रुक नहीं पाता है
रखा-रखा अमृत भी विष बन जाता है
चूका हुआ क्षण कभी वापस नहीं आता है।

अवाक हो? आश्चर्यविमुग्ध हो? चकित हो? छलांग का भाव उठा? फिर पूछो मत। फिर लगने दो छलांग!

मुग्ध देखते ही रहे
ज्वार की अपार फेन-चूड़ा पर उठा हुआ
अमृत-घट
वक्त का रथ जो तुम्हारे लिए लाया था
तुमने उसे लिया नहीं!
बांट कर पीया नहीं!
वह चिराग चौमुख कर
लोगों को तुमने दिया नहीं!
रोशनी पर धूल पड़ी
चांदना हुआ नहीं!
उठ रही इस औघड़ तरु से
मौन काल की पुकार
छाया भोगने वालो होशियार
यह सब तुम पर निछावर किया
हर बार
किंतु वक्त करता नहीं
किसी का भी इंतजार
समय का रथ ज्यादा रुक नहीं पाता है
रखा-रखा अमृत भी विष बन जाता है
चूका हुआ क्षण कभी वापस नहीं आता है।

– ओशो
प्रेम पंथ ऐसो कठिन
नौवां प्रवचन, आखिरी प्रश्न
(पूरा प्रवचन टेप पर भी उपलब्ध है)